रिकॉर्ड :– इनसाफ की डगर पे..... ॐ पिताश्री 16/8/63
ओम् शांति। बच्चे जानते हैं, दुनिया भी जानती है। हरेक मनुष्य को अपना देश, जिसको जन्म स्थान अथवा बर्थ प्लेस कहते हैं, वो प्यारा रहता है। वैसे ही परमपिता प० शिव खुद कहते हैं, मुझे भी भारत खण्ड, जिसको ही सच खण्ड कहा जाता है, वो प्यारा है। मुझ प० को भी मनुष्य सच, ट्रुथ कहते हैं। भारतवासी भी कहते हैं, सत्य प०; क्योंकि वो सत्य कथा सुनाते हैं। बाकी जो भी मनुष्य मात्र कथाएँ सुनाते हैं, उनको शास्त्रों की कथा कहा जाता है। अनेक प्रकार की कथाएँ हैं। बाप भी कहते हैं, जो भी कथाएँ सुनाते हैं, वो सभी हैं झूठ। हम जो सुनाते हैं, यह है सत्य नारायण की कथा अथवा तीजरी की कथा, अमर कथा कहो। मैं जो सुनाता हूँ, वो है सत्य। बाकी सभी है झूठी कथा सुनाने वाले। यह कथाएँ सभी सुनते–2 झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार बन जाता है। सभी से बड़े ते बड़े झूठ है ईश्वर को सर्वव्यापी मानना। यह सभी से कड़ी, गंदी कथा सुनाना है। पूछा जाता है, ईश्वर कहा है तो कह देते– पत्थर–भित्तर सभी में है। बाप समझाते हैं– बस, इन जैसे झूठ कोई नहीं है। मनुष्य बड़े झूठ बोलते हैं। दुनिया में सभी से बड़े झूठ बोलने वाले हैं, यह विद्वान–आचार्य–महामण्डलेश्वर, जो भारत की गवर्मेन्ट के भी गुरु हैं। जो कुछ कहते, साफ झूठ, 100% झूठ है। 100% झूठ होने से 100% दुखी, कौड़ी तुल्य हो गए हैं। बाप आकर सत्य बात सुनाते हैं। कल्प–2 जिन्हों को हम सुनाते हैं वो ही आकर सुनते हैं। इस ड्रामा में पार्ट ही उन्हों का है, जिन्होंने कल्प–2 आकर सत्य ना० बनने की कथा सुनी है। तुम जानते हो, ऊँच ते ऊँच भगवत वो एक है। मनुष्य को तो ऊँच ते

ऊँच नहीं कहा जाता। ऊँच ते ऊँच है परमपिता प०। बाकी सभी मनुष्य मात्र हैं नीच ते नीच। पत्थरबुद्धि, पतित। अभी तुम बाप के सामने बैठे हो तो नशा चढ़ा है। बाहर जाने से फिर (वो) नशा उड़ जाता है। अभी तुमको कितना नशा है। परमपिता प० शिव, उनके चित्र हैं; परन्तु उनकी जीवन कहानी को कोई नहीं जानते। सोमनाथ का मंदिर लूटा गया; परन्तु यह थोड़े ही कोई जानते कि सोमनाथ था कौन, (क्या किया था), क्यों इतना भारी मंदिर बना है। बुद्ध ज़रूर कुछ कर्तव्य कर गए हैं तब तो यादगार है। (बहुतों) को (सुख) दिया है तब इतना भारी मंदिर बना है। यहाँ यह बड़े–2 मकान, आगरे का ताज आदि, यह तो राजाओं ने अपने पैसे (से बैठ) बनाए हैं। यह तो प० ऊँच ते ऊँच है। मनुष्य सृष्टि में फिर ल०ना० पवित्र ते पवित्र नम्बर एक (वन) हैं। उन्हों की भी महिमा है; क्योंकि वह भारत में सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी होकर गए हैं। इतनी महिमा नई दुनिया में और कोई की हो नहीं सकती। मनुष्य तो बिल्कुल ही बेसमझ हैं। सिर्फ कहेंगे, भारत के प्राचीन गॉड–गॉडेज हैं, बस। तुम तो सबकी जीवन कहानी बता सकते हो। ऐसे तो नहीं, टयूँ–टप सबकी बैठ (सुना)वेंगे। नहीं। ऊँच ते ऊँच कौन है, उसने क्या कर्तव्य किया, वो तुम जानते हो। ल०ना० ने यह पद कैसे पाया? ज़रूर अगले जन्म में बहुत दान–पुण्य किया हुआ है– डायरैक्ट और इनडायरैक्ट। बड़े–2 महाराजाएँ होकर गए हैं, ज़रूर उन्होंने बड़ा दान–पुण्य किया। कोई गरीब ने अपना सब कुछ दिया होगा तो दूसरे जन्म में राजाई मिल जाती; परन्तु जितना सुख स्वर्ग में मिलता है (इतना) तो नहीं मिल सकता। तुम सब धर्म वालों के लिए समझा सकते हो। वे तो आकर सिर्फ अपने धर्म की स्थापना करते हैं। ..... की वृद्धि होती है। बस। मनुष्य कहते हैं, हम आवें ही नहीं; परन्तु आना (तो) सबको है। (उन)का बड़ा ..... आना पड़े। .... यह बेहद का बाप तो आकर सारी दुनिया को सुख देते हैं। इसलिए ही ..... मनुष्य पुकारते हैं, हे परमप्रिय प० रहम करो, यह करो; परन्तु उनको जानते कोई भी नही। यह भी नहीं जानते ..... भगवान आते हैं या नहीं। भगवान को आना तो ज़रूर है, उनको याद करते रहते हैं। बाप आकर समझाते हैं ..... भारत में भक्तिमार्ग चलता है। भक्ति में कभी स्थायी सुख नहीं मिल सकता। भल सुखी बहुत होते हैं तो भी कारण वश कोई रोग होगा, रिंक होगा। सन्यासी के लिए तो है ही कौन! जो मरेगा तो दुख आदि होगा। वे तो जंगलों में .....योग में रहते हैं। भल उन्हों का अयथार्थ योग है, तो भी फल तो उसका मिलता है ना। सन्यासी भी कितने हैं! पढ़ते .... हैं। शास्त्रों की कथा आदि सुनाते रहते हैं। जन्म–मरण में आते–जाते रहते हैं। सूक्ष्मवतन ब्र०वि०शं० ..... कोई जानते ही नहीं। भल गायन करते हैं– ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना.....; परन्तु कब, कैसे करते हैं, कौन इन्हों से कराते हैं, वे कुछ भी नहीं जानते। इसको बुद्धि का घोर अंधियारा कहा जाता। बाबा, मम्मा, बच्चे, सब घोर अंधियारे में थे। रात–दिन का अन्तर है। ज़रूर जो बुजुर्ग अनुभवी होगा, वही बता सकेगा। छोटे बच्चे तो (अनुभवी नहीं) हो सकते। कृष्ण को अनुभवी नहीं कहेंगे। वे क्या जानें! तो बाप समझाते हैं, मैं नॉलेजफुल हूँ। सारी दुनिया को मैं (जानता हूँ), कैसे सब आते हैं, कौन–2 कब आते हैं। सारी सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का पूरा समाचार देते हैं। आदि से (अंत तक) का पूरा समाचार तो ज़रूर अंत में ही आकर देगा ना। बीच में आए तो आदि–अंत का (नॉलेज) कैसे (हो)। ..... नहीं आवेंगे। यह तो तुम बच्चे जानते हो, शिवबाबा ही आकर कहते हैं– मीठे बच्चे। फिर ब्रह्मा बाबा (जिस्मानी) बच्चों को कहते हैं। क्यों? उनको अपने बच्चे नहीं थे क्या? हाँ, उन सबको छोड़ अब रूहानी बच्चों का ...प बना है। रूहानी बाप आकर रूहों को समझाते हैं। भल यह जिस्मानी बाप ब्रह्मा समझाते हैं, तो भी आत्माओं से बात करते हैं। धारणा आत्मा को होती है। इसको कहा जाता है सोल कॉन्शेस। तुम जानते हो, हमारी आत्मा को प० से ज्ञान मिला है, वह सुनाती है। आत्मा इन कानों के ऑरगंस से सुनती है। आत्मा (बुद्धियोग) लगा (सुन)ती है। बहुतों की बुद्धि भटकती है ना। भक्तिमार्ग में भी बुद्धियोग और–2 तरफ चला जाता है। देह–अभिमान आने से ही बुद्धि भटकती है। देही–अभिमानी हो रहे तो बुद्धि कहाँ जावेगी नहीं। वहाँ ...सको जाना ही है। .... देह–अभिमानी है तो यह दुनिया, मित्र–संबंधी आदि याद आते हैं। देही–अभिमानी होने से सिर्फ आत्मा की ही याद रहती।

(अधूरी मुरली)